M.A. Sem III

CC – 11

Topic –

Historical Perspective

Dr Kumari Sadhana Prasad

Associate Prof.

Deptt of Psychology

Historical Perspective to Educational Psychology:-

शिक्षा मनोविज्ञान का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि शिक्षा की प्रक्रिया। शिक्षा मनोविज्ञान के इतिहास में समय-समय पर बड़े-बड़े वैज्ञानिकों द्वारा योगदान किया गया है।

प्लेटो (Plato) तथा अरस्तू (Aristotle) ने शिक्षा की एक विशेष पद्धति का विकास किया तथा उसमें मनोवैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धांतों के महत्व पर बल डाला। लोगों के लिए अलग-अलग शिक्षा, चरित्र-शिक्षा, शिक्षण की विभिन्न पद्धति प्रधान थे। अरस्तू मस्तिष्क (mind) के संकाय सिद्धांत (faculty theory) में विश्वास रखकर शिक्षा में मनोवैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धांतों की उपयोगिता पर बल डाला था। यही कारण है कि इनके द्वारा शिक्षा के प्रतिपादित मनोवैज्ञानिक आधार का प्रभाव पूरे संसार पर काफी व्यापक रूप से पड़ा। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के एक नए सिद्धांत का जन्म हुआ जिसे शिक्षा का औपचारिक अनुशासन सिद्धांत (Theory of formal discipline of education) की संज्ञा दी गई। इस सिद्धांत के अनुसार कुछ खास-खास कठिन विषयों जैसे गणित, लैटिन, ग्रीक आदि के सीखने में व्यक्ति का मस्तिष्क काफी प्रशिक्षित हो जाता है और तब प्रशिक्षित मस्तिष्क का धनात्मक हस्तांतरण (Positive transfer) शिक्षा के क्षेत्र में होता है।

शिक्षा मनोविज्ञान का इतिहास (1880) में Francis Galton (1822-1911) द्वारा किए गए अभूतपूर्व योगदानों से प्रारंभ होता है। इन्होंने वैयक्तिक विभिन्नता (individual differences) के अध्ययन पर अधिक बल डाला जिसका परिणाम स्वरूप व्यक्ति की मानसिक क्षमता (mental ability) के मापन पर ध्यान गया। Galton पहले ऐसे मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने व्यक्ति की मानसिक क्षमता को मापने के लिए एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological test) का निर्माण किया था। इनके द्वारा व्यक्तियों की बुद्धि की माप उनकी संवेदी क्षमताओं (Sensory capacities) के आधार पर किया जाना चाहिए।

इसके बाद G. Stanley Hall 1844-1924 ने प्रश्नावली के सहारे बच्चों के शैक्षिक व्यवहारों का अध्ययन कर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। इस दिशा में Ebbinghaus, 1850-1909 तथा विलियम जेम्स (1842-1910) द्वारा इस प्रकार अध्ययन किया जा चुका था जिसमें शिक्षा मनोविज्ञान को अनेकों नए सिद्धांतों एवं तथ्यों की प्राप्ति हो चुकी थी। विलियम जेम्स ने शिक्षा को उन्नत बनाने के लिए वर्ग में बच्चों के सामने सीखने के लिए रखे गए पाठ का स्तर उनके ज्ञान के स्तर से थोड़ा ऊँचा होना चाहिए ताकि बच्चे अपने मन या मस्तिष्क पर अधिक बल देकर उसका समाधान करना सीखें।

John Dewey (1859-1952) ने शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में 1894 में शिकागो विश्वविद्यालय में पहली शिक्षा मनोविज्ञान की प्रयोगशाला (Laboratory) की स्थापना की।

जान डिवी (John Dewey) के निम्नलिखित तीन विचारों (ideas) का प्रभाव शिक्षा मनोविज्ञान के विकास के लिए काफी लाभदायक सिद्ध हुआ —

(i) उन्होंने बच्चों को एक निष्क्रिय (Passive) शिक्षार्थी न मानकर सक्रिय शिक्षार्थी (active learner) माना। इससे पहले लोगों का मत था कि बच्चे वर्ग में शांत भाव से बैठते हैं तथा निष्क्रिय ढंग से किसी पाठ को रट-रटकर सीखते हैं। उन्होंने इस विचारधारा को अस्वीकृत किया और कहा कि बच्चे किसी कार्य को सक्रिय ढंग से करके ही उत्तम ढंग से सीखते हैं।

(ii) Dewey का मत था उत्तम शिक्षा वही है जो बच्चों पर सम्पूर्ण ढंग से बल डालता हो और वातावरण के साथ बच्चों का समायोजन के महत्व को भी समझता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि शिक्षकों को सिर्फ बच्चों को किसी शैक्षिक विषय का ज्ञान देना पर्याप्त नहीं है बल्कि उनमें यह भाव पैदा करना चाहिए कि उस विषय पर किस तरह से सोचना चाहिए और स्कूल के बाहर के वातावरण के साथ किस ढंग से समायोजन (adjustment) किया जाना चाहिए। बच्चों को एक विचारशील समस्या साधक (reflective problem solver) बनने का भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

(iii) Dewey का तीसरा महत्वपूर्ण विचार यह था कि सभी बच्चे एक सुयोग्य शिक्षा पाने लायक होते हैं। उनका मत था कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूह

(Socio-economic group) तथा प्रजातीय समूह (ethnic-group) के सभी लड़के एवं लड़कियों को सुयोग्य शिक्षा (competent education) दिया जाना चाहिए। इससे पहले सुयोग्य शिक्षा देने की प्रथा केवल उन्हीं बच्चों तक सीमित थी, जो धनी परिवार के थे।

1950 के बाद शिक्षा मनोविज्ञान में तीव्र विकास हुआ है। आजकल शिक्षा मनोविज्ञान सिर्फ सीखने (learning) तथा सिखाने (teaching) के क्षेत्रों में ही नहीं कार्य कर रहा है बल्कि वे अन्य प्रमुख क्षेत्रों में जैसे मानसिक स्वास्थ्य (mental health), सामाजिक कुसमायोजन (social maladjustment) शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन (educational & Vocational guidance) मापन एवं मूल्यांकन जैसे नए-नए क्षेत्रों में भी कार्यरत है। इनसे नए क्षेत्रों में भारतीय मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी महत्वपूर्ण योगदान किए जा रहे हैं जो आने वाले दशकों में इतिहास के पन्नों पर महत्वपूर्ण भाग बनेंगे।